SC

[60/A-76] No. of printed pages: 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY
MA (HINDI) (III Semester) Examination
Saturday, 2nd April
2016
2.30 pm - 5.30 pm
PA03CHIN03 - Hindi
छायावादी काव्य

कुल गुण : ७०

प्र.१ महाकाव्य के लक्षणों के आधार 'कामायनी' का मूल्यांकन कीजिए । (१७)

अथवा

प्र.१ निराला कृत 'कुकुरमुत्ता' कविता के भावपक्ष एवं कलापक्ष की सोदाहरण चर्चा करें ।

प्र.२ सुमित्रानंदन पंत के काव्य की विकासयात्रा को रेखांकित करते हुए इनके छायावादी कवि रूप पर प्रकाश डालिए । (१७)

अथवा

प्र.२ महादेवी वर्मा की पठित कविताओं की मूल संवेदना को समझाइए ।

प्र.३ टिप्पणी लिखें (**किन्हीं दो**): (१८)

(१) 'कामायनी' शीर्षक
(२) महादेवी वर्मा की भाषा शैली
(३) 'परिवर्तन' का काव्यरूप
(४) 'सरोजस्मृति' का सार

प्र.४ संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए । (१८)

१) नित्य यौवन छवि से ही दीप्त, विश्व की करुण कामना मूर्ति;
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति ।
उषा की पहिली लेखा कांत, माधुरी से भींगी भर मोद;
मद भरी जैसे उठे सलज्ज भोर की तारक द्युति की गोद ।

अथवा

१) चिन्ता करता हूँ मैं जितनी उस अतीत की, उस सुख की;
उतनी ही अनंत में बनती जातीं रेखाएँ दुख की ।
आह सर्ग के अग्रदूत ! तुम असफल हुए, विलीन हुए ।
भक्षक या रक्षक, जो समझो, केवल अपने मीन हुए ।

२) कहाँ आज वह पूर्ण पुरातन, वह सुवर्ण का काल !
भूतियों का दिगंत छविजाल,
राशि-राशि विकसित वसुधा का वह यौवन विस्तार ?
स्वर्ग की सुषमा जब साभार
धरा पर करती थी अभिसार !

अथवा

२) वे जो यमुना के से कछार
पद फटे बिवाई के उधार
खाये के मुख ज्यों, पिये तेल
चमरौधे जूते से सकेल
निकले, जी लेते, घोर-गन्ध
उन चरणों को मैं यथा अन्ध,
कल घ्राण-प्राण से रहित व्यक्ति
हो पूजूँ, ऐसी नहीं शक्ति ।

☺☺☺☺☺